



सौ. त्रिवेणी एम. तुरकर

बी.एस.सी., एम.एड.

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका

श्रीमती सरस्वतीबाई महिला विद्यालय, गोंदिया

निवास -

मामा चौक, सिविल लाईन, गोंदिया

मोबाइल : ९८९०५०२०९७

SHAL 8423175216

बचपन की वापसी

बाल रचनाएँ

सौ. त्रिवेणी तुरकर

बी.एससी, एम.एड.

पीडीएफ़ ई-बुक रचनाकार (<http://rachanakar.com>) की प्रस्तुति.

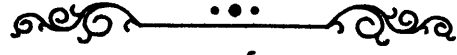
बचपन की वापसी

बाल कविता व कहानी संग्रह

सौ.त्रिवेणी तुरकर

मामा चौक, सिविल लाईन, गोंदिया

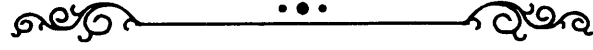
मोबाइल : ९८९०५०२०९७



समर्पण

श्रद्धेय पिता स्व.श्री ताराचंद रावजी पवार
व मेरे उन सभी गुरुजनों को
जिन्होंने अच्छे साहित्य व कहानियों के प्रति
मेरे अनुराग में सतत् वृद्धि की।

- प्रकाशक
मोहनलाल टीकाराम तुरकर
 - रचनाकार
सौ.त्रिवेणी मोहनलाल तुरकर
 - टाईप सेटिंग व डिज़ाइनिंग
शैलेन्द्र एच. सरजारे
 - मुद्रक
शैल प्रिन्ट
चांदनी चौक, गोंदिया - ९४२३१७५२१६
 - मुखपृष्ठ
अरुण नशीने
आर्ट प्वाइंट, गोंदिया - ९३७२८८८७८९
 - मूल्य : रु. २५
 - प्रथम संस्करण : ७ मार्च २००८
 - © सर्वाधिकार लेखिका के अधीन
-



उपहार

प्रिय निहारिका के जन्मदिवस के अवसर पर
 इस लघु पुस्तिका के रूप में
 निहारिका, नन्हें वेद व उन सभी बच्चों को...
 जो कहानियां व कविताओं को सुनने व पढ़ने
 के शौकीन हैं, जिन्हें कहानी सुने बिना नींद नहीं आती.
 इन सभी प्यारे-प्यारे बच्चों के लिए
 एक छोटा-सा उपहार
 जो उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा
 ऐसी उम्मीद के साथ...

- सौ त्रिवेणी तुरकर

भूमिका

सौ.त्रिवेणी तुरकर में बचपन से हिन्दी के प्रति रुझान रहा है। वे मेरी छात्रा रहीं और मेरे हिन्दी के अध्यापन से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी साहित्य के पठन-पाठन में विशेष रुचि रखकर हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं के ग्रंथों का अच्छा अध्ययन किया। उनमें हिन्दी में सृजन की क्षमता पहले ही से थी। अब सेवानिवृत्ति के बाद अध्यापन कार्य से मुक्त होने पर अपनी बाल कविताओं एवं शिक्षाप्रद कहानियों के माध्यम से उन्होंने बाल साहित्य लेखन की दिशा में अपनी लेखनी का परिचय इस प्रथम बाल संग्रह के रूप में हिन्दी जगत को दिया यह अभिनन्दनीय है। आज हिन्दी में बाल साहित्य की कमी है। बाल साहित्य में पत्र-पत्रिकाएं गिनी-चुनी हैं। इसलिए बाल साहित्य लेखन में उनका यह प्रयास सराहनीय है।

इस प्रथम प्रयास की प्रथम रचना **बचपन की वापसी** में आपने नन्हे शिशु के आगमन से वे अपने भूलेबिसरे बचपन के लौटने का एहसास करती हुई, अपने मातृ-वात्सल्य का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। **सप्तरंग** कविता में छोटे बाल-गोपालों को वे सातरंगों का ज्ञान कराते हुए प्रत्येक रंग का वैशिष्ट्य बतलाते हुए श्वेत रंग को शांति का प्रतीक बतलाती है। इसी प्रकार **सात का गीत** में सप्ताह के सात दिनों का परिचय बच्चों को देती है। **स्वतंत्रता दिवस** कविता में कवियत्री बचपन से स्वतंत्रता दिवस की महिमा का ज्ञान बाल छात्रों को देती है। और मातृभूमि के प्रति एवं आजादी को अमर बनाने का संदेश देती है। **आम का पेड़** कविता के माध्यम से बच्चों को एक से दस तक की गिनती सिखाती है। देश की मासूम कन्याएं कितनी भोली हैं, सरल हैं, बड़ी होकर वे हर चुनौती को स्वीकार करती हुई देश के सुखद भविष्य के निर्माण में अपना योगदान आज दे रही हैं, इसका ज्ञान **देश की बेटियों** कविता से होता है। **जाड़े**

का मौसम कविता बच्चों को हर मौसम का ज्ञान ही नहीं कराती, बल्कि अलग-अलग मौसम में हमारे जन-जीवन में क्या-क्या बदलाव आता है, इसका ज्ञान बच्चों को कराती है। **बारहमासा** शीर्षक कविता में कवियत्री बारह महिनों में कौन-कौन से पर्व, त्यौहार आते हैं और उन त्यौहारों को हम भारतीय किस प्रकार मनाते हैं इसकी जानकारी बच्चों को देती हैं। **गर्मी की छुट्टियां** कविता से सप्ताह के सात दिनों की जानकारी बच्चों की दी गई है। और बच्चे किस प्रकार पूरे सप्ताह गर्मी की छुट्टियां बिताते हैं इसकी जानकारी बच्चों को मिलती है।

इस प्रकार बच्चों को आवश्यक अपने आस-पास के परिसर, प्रकृति, तीज-त्यौहार, परम्पराओं का ज्ञान बच्चों को देने का उनका अपना एक एप्रोच है जो कवियत्री की अपनी एक विशेषता है।

उनके इस प्रथम बाल संग्रह में कुछ कहानियां भी संग्रहित हैं। कहानी **इंद्रधनुष** के माध्यम से लेखिका ने सातरंगों वाली परियों के माध्यम से इंद्रधनुष के रहस्य को समझाया है कि सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं और ~~जुही~~ ^{जुही} से इंद्रधनुष बनता है। **मालीबाबा** कहानी में लेखिका ने श्याम व मालीबाबा की मित्रता के माध्यम से वृद्ध पुरुषों की सेवा करना, निस्वार्थ भाव से पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना तथा पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने की शिक्षा दी है। **सब्जी पार्क में मुनिया** कहानी में लेखिका ने सपने में हरी सब्जियों का महत्व बतलाया है जो सेहत के लिए लाभदायक है। **अलादीन का चिराग** कहानी के माध्यम से लेखिका ने बच्चों को सीख दी है कि सुरेश किस प्रकार मेहनत व ज्ञान प्राप्त कर कबाड़ी से एक बड़े वर्कशॉप का मालिक बन गया। इसलिये कड़ी मेहनत व ज्ञान ही अलादीन का चिराग है। **विरासत** कहानी में लेखिका ने गुरु के आश्रम में तीन शिष्यों के माध्यम से बतलाया कि शिक्षा के सदुपयोग के साथ ही साथ अपने पैतृक गुणों को भी संभाल

कर रखना चाहिए। **कर भला हो भला** कहानी में लेखिका बच्चों को सीख देती है कि हमें संकट में दूसरों की निस्वार्थ सेवा करनी चाहिए। **चले गांव की ओर** कहानी से स्पष्ट होता है कि शहरों में बसे हुए लोगों को अपना गांव नहीं भूलना चाहिए, जहां आप पैदा हुए हैं।

इस प्रकार लेखिका की सभी कहानियां शिक्षाप्रद हैं और नन्हें बच्चों को उत्तम संस्कारों की शिक्षा देती है। बाल साहित्य के क्षेत्र में उनका यह प्रथम बाल संग्रह **बचपन की वापसी** निश्चय ही बच्चों के लिए उपयोगी ही नहीं, उत्तम संस्कारों की सीख देने वाला है।

बाल साहित्य जगत में इसका स्वागत किया जाना चाहिए।

– डॉ.हीरालाल जायसवाल 'हीरा'

वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार

एम.ए., एम.एड., पी.एच.डी. शास्त्री

साहित्य रत्न

पी.एच.डी.रिसर्च सुपर वाइजर (गार्डड)

दो शब्द

एक शिक्षिका के रूप में जीवन का अधिकांश समय बालक, बालिकाओं के बीच गुजारने के बाद इन प्यारे दोस्तों के बीच फिर से वापस आने की मेरी तीव्र इच्छा के फलस्वरूप **बचपन की वापसी** के रूप में इस लघु पुस्तिका का सृजन हुआ है।

इस सृजन का श्रेय देना चाहूंगी मेरी प्यारी पोती निहारिका व परिवार के उन सभी बच्चों को जो अब बड़े हो गये हैं पर अपने बचपन में मुझसे कहानियां सुनने के लिए उत्सुक रहते थे।

शाला की उन प्यारी बच्चियों को जिन्हें रिक्त तासिकाओं में जाकर पाठ्य पुस्तकें पढ़ाने के बदले कहानियां सुनाया करती और वे भी उसका आनंद लेती।

कहानियां जो मनोरंजन के साथ ही साथ कुछ न कुछ सीख अनजाने में ही दे जाती है, बच्चों के मन में गहरे तक पैठ जाती है।

इस छोटी-सी पुस्तिका के माध्यम से मैं अपने मुँह-
मुन्ने दोस्तों तक पहुंचना चाहती हूं जो कल का भविष्य है।

मेरी कामना है कि बच्चे अच्छी कहानियां व कविताएं पढ़ें। अच्छे साहित्य के द्वारा अच्छे संस्कारों को ग्रहण करें और देश के उज्ज्वल भविष्य के रूप में अपने व्यक्तित्व को निखारें।

— सौ. त्रिवेणी तुरकर

दि. ७ मार्च २००८

गोंदिया.

आभार

प्यारे बच्चों के लिए लिखी गई इस पुस्तिका की भूमिका लिखने के मेरे अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर मेरे गुरु डॉ. हीरालाल जायसवाल हीरा ने अपना अमूल्य समय देकर इसकी प्रत्येक कविता व कहानी पढ़कर उस पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। मैं आपकी अत्यंत आभारी हूं। जिनके अध्यापन ने शालेय अवस्था से ही हिन्दी कविता, कहानी के प्रति मेरा अनुराग वृद्धिगत किया। भविष्य में भी मुझे उनका मार्गदर्शन व आशीर्वाद मिलता रहेगा, इसकी मुझे पूर्ण आशा है।

मेरे द्वारा लिखित अलग-अलग रचनाओं को पुस्तक रूप देने की मेरी इच्छा को फलीभूत करने में प्रोग्रेसिव्ह कॉन्वेंट के प्रिंसीपल श्री निरज कटकवार ने अपना समय व सहयोग देकर इसे मुद्रण अवस्था तक पहुंचाने में सहयोग दिया इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देती हूं।

पुस्तिका के आकर्षक मुद्रण का कार्य समय पर करके देने के लिए मैं शैल प्रिंट के श्री शैलेन्द्र एच. सरजारे व उनके सहयोगियों की आभारी हूं, जिन्होंने इस कार्य को लगन से किया।

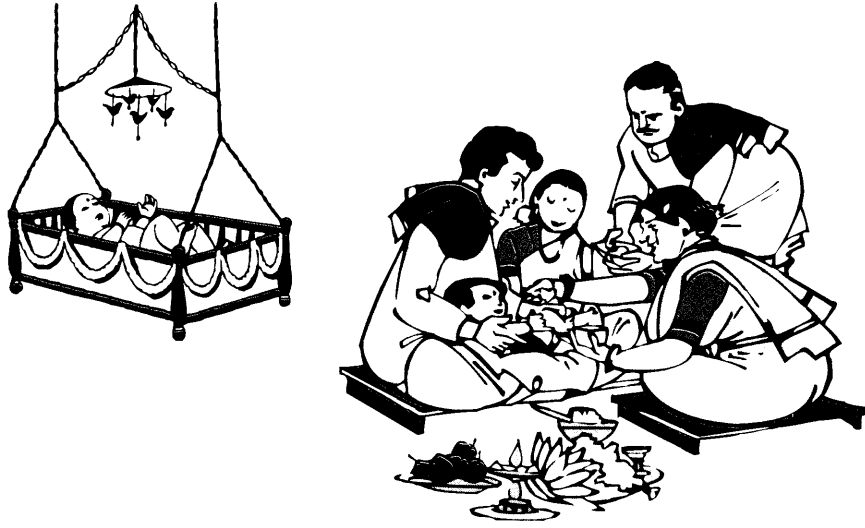
पुस्तिका के प्रकाशन में मेरे जीवनसाथी श्री मोहनलाल तुरकर व परिवार के सभी सदस्यों के सुझाव व सहयोग के फलस्वरूप ही इस कार्य की पूर्ति संभव हो पायी है।

अंत में मैं उन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

- सौ.त्रिवेणी तुरकर

अनुक्रमणिका

कविताएँ -	१.	बचपन की वापसी	११
	२.	सात का गीत	१२
	३.	आम का पेड़	१३
	४.	स्वतंत्रता दिवस	१४
	५.	सप्तरंग	१५
	६.	देश की बेटियाँ	१६
	७.	जाड़े का मौसम	१७
	८.	बारह मासा	१८
	९.	गर्मी की छुट्टियाँ	१९
एकांकी -	१०.	आरोग्य परी का संदेश	२०
कहानियाँ -	११.	विरासत	२२
	१२.	सब्जी पार्क में मुनिया	२४
	१३.	इंद्रधनुष	२६
	१४.	माली बाबा	२८
	१५.	कर भला, हो भला	३०
	१६.	चले गांव की ओर	३२
	१७.	अलादिन का चिराग	३४
	१८.	राजा बेटा और रानी परी	३६
	१९.	प्रेरणा	३८



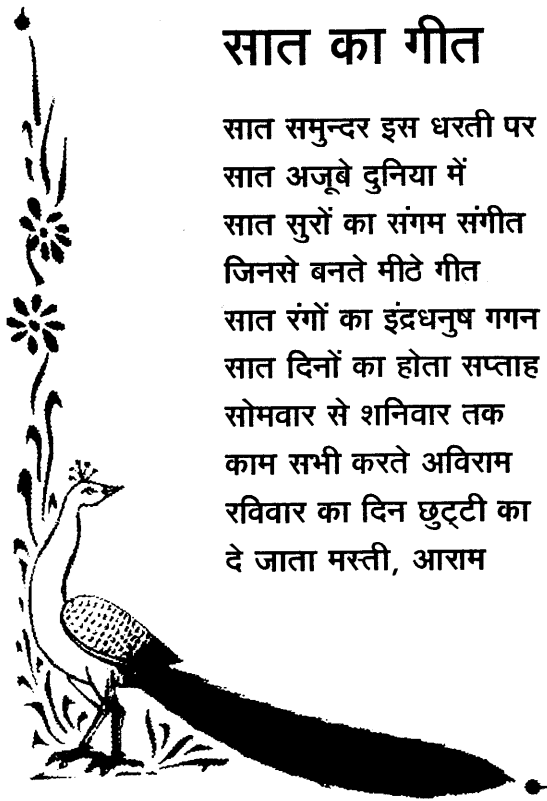
बचपन की वापसी

घर में नन्हें शिशु का आगमन
 वापस लौटाने आता भूला बिसरा बचपन
 शिशु का भोला मुख, रोता हो या मुस्काता
 लगता बड़ा ही प्यारा और सलोना
 लौट आता है घर में, फिर से नव उल्लास
 बिखरी रहती शिशु की वस्तुयें आसपास
 घर के छोटे बच्चे पाते सजीव खिलौना
 मिलते रहता शिशु को, नित नया खिलौना
 नन्हें शिशु से मिलने, आते सभी स्वजन
 कामकाज भूलकर,
 खेलने में उससे होते मगन



सात का गीत

सात समुन्दर इस धरती पर
सात अजूबे दुनिया में
सात सूरों का संगम संगीत
जिनसे बनते मीठे गीत
सात रंगों का इंद्रधनुष गगन में
सात दिनों का होता सप्ताह
सोमवार से शनिवार तक
काम सभी करते अविराम
रविवार का दिन छुट्टी का
दे जाता मस्ती, आराम

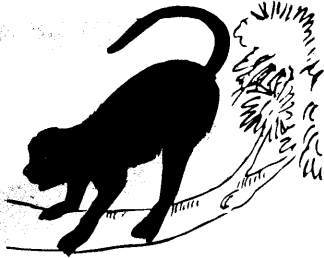




आम का पेड़

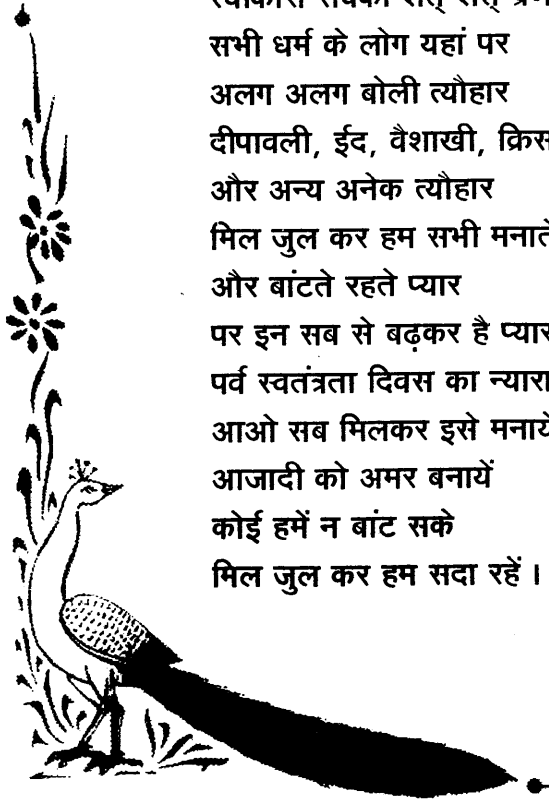


मेरे आंगन में एक आम का पेड़ है ऐसा
 उम्र में लगता लगभग मेरे दादाजी जैसा
 सदा बसेरा करती उस पर दो कोयलें सयानी
 सुबह सबेरे मधुर कूक उनकी, लगे सदा सुहानी
 इसी आम पर बसते कौवों के परिवार तीन
 उनकी कांव कांव सुनकर लगता, आयेगा कोई प्रियजन
 चार-चार है इस पर रहते, तोते सुंदर हरे हरे
 दादाजी सिखलाते उनको कहना राम राम हरे हरे
 कभी कभी आ जाते कहीं से पांच बन्दर
 उछलकूद कर, आम गिराकर, हो जाते छूमंतर
 खेलती रहती इस पेड़ पर, छह प्यारी गिलहरियां
 ऊपर नीचे, नीचे ऊपर करती रहती अठखेलियां
 छाया में इसकी सदा खेलें बच्चे सात-आठ
 कभी दौड़ते कभी उछलते कभी करते अपना पाठ याद
 आमों के मौसम में रहती दादाजी की बैठक यहीं
 नौ-दस बच्चे घेरे उनको सुनें कहानी रोज नयी



स्वतंत्रता दिवस

प्यारा भारत देश हमारा
 दुनिया में है सबसे न्यारा
 भारतमाता सबकी माता
 हम सब है इसकी संतान
 मां तेरे पावन चरणों में
 स्वीकारो सबका शत् शत् प्रणाम
 सभी धर्म के लोग यहां पर
 अलग अलग बोली त्यौहार
 दीपावली, ईद, वैशाखी, क्रिसमस
 और अन्य अनेक त्यौहार
 मिल जुल कर हम सभी मनाते
 और बांटते रहते प्यार
 पर इन सब से बढ़कर है प्यारा
 पर्व स्वतंत्रता दिवस का न्यारा
 आओ सब मिलकर इसे मनायें
 आजादी को अमर बनायें
 कोई हमें न बांट सके
 मिल जुल कर हम सदा रहें ।



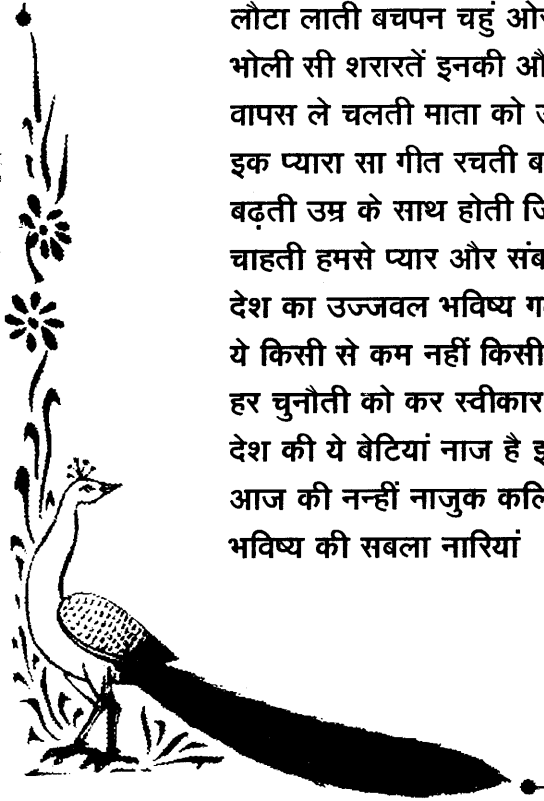
सप्तरंग

सात रंगों का इंद्रधनुष
 बै, आ, नी, ह, पी, ना, ला
 बैंगनी फूल सजे बागों में
 बैंगन की सब्जी भोजन में
 अंबर ऊपर है आसमानी
 नीला दिखता सागर का पानी
 हरी भरी यह प्यारी धरती
 पीला पीला, सूरज दादा
 है सबका वह जीवन दाता
 नारंगी के फल पेड़ों पर
 जिसके रस से मिले नवजीवन
 लाल गुलाब बागों की शोभा
 देता सभी को प्यार का संदेशा
 सात रंग मिलकर होते जब एक
 बने श्वेत रंग शांति प्रतीक



देश की बेटियां

घर बगिया की नन्ही-सी नाजुक कलियां प्यारी बेटियां
 लौटा लाती बचपन चहुं ओर बिखेरती खुशियां
 भोली सी शरारतें इनकी और मीठी प्यारी बतियां
 वापस ले चलती माता को उसके बचपन की गलियां
 इक प्यारा सा गीत रचती बढ़ती किशोरियां
 बढ़ती उम्र के साथ होती जिम्मेदार ये बेटियां
 चाहती हमसे प्यार और संबल ये लड़कियां
 देश का उज्ज्वल भविष्य गढ़ती ये किशोरियां
 ये किसी से कम नहीं किसी क्षेत्र में पीछे नहीं
 हर चुनौती को कर स्वीकार आगे बढ़ती युवतियां
 देश की ये बेटियां नाज है इन पर हमें
 आज की नन्हीं नाजुक कलियां,
 भविष्य की सबला नारियां



जाड़े का मौसम



मौसम आया जाड़े का भाई
संग ले अपने कंबल, कोट, रजाई
ऊनी टोपी, मफलर, स्वेटर
निकले सब अलमारी से बाहर.

जाड़ों में है सबको भाती, सूरज दादा से दोस्ती
सुबह सुबह की ठंड न भाती, दिन में सबको धूप सुहाती
जाड़ों की लंबी रातों में जब, बढ़ जाती ठंड
आग जलाकर लोग सेंकते, अपने अपने अंग
भाता बच्चों को इस मौसम में, देर देर तक सोना.

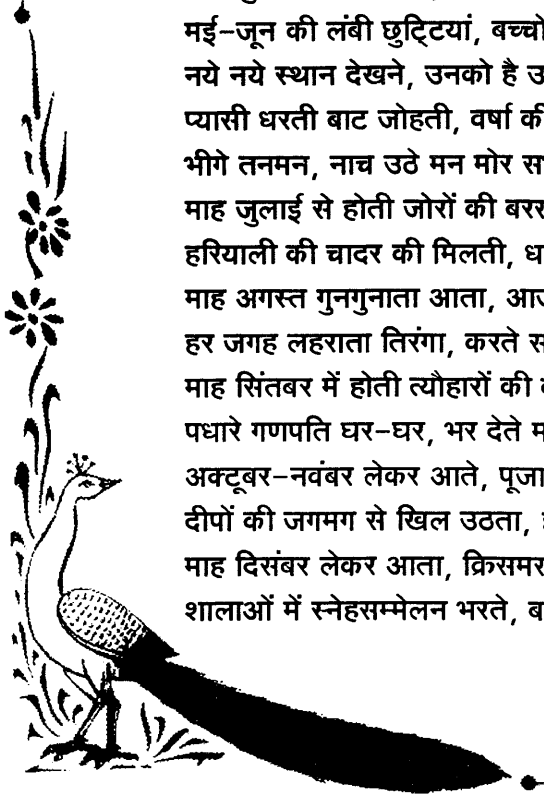
पिकनिक पर जाना, खेलना, मौज मनाना
मेवे, गुड़, लड्डू, फल, सब्जियां ताजा
दुगुना कर देती पिकनिक की मौज-मजा

इस मौसम में होते रहते,
शालाओं में स्नेह सम्मेलन
ठंडे मौसम को भूल,
बच्चे रहते इनमें मगन मगन.



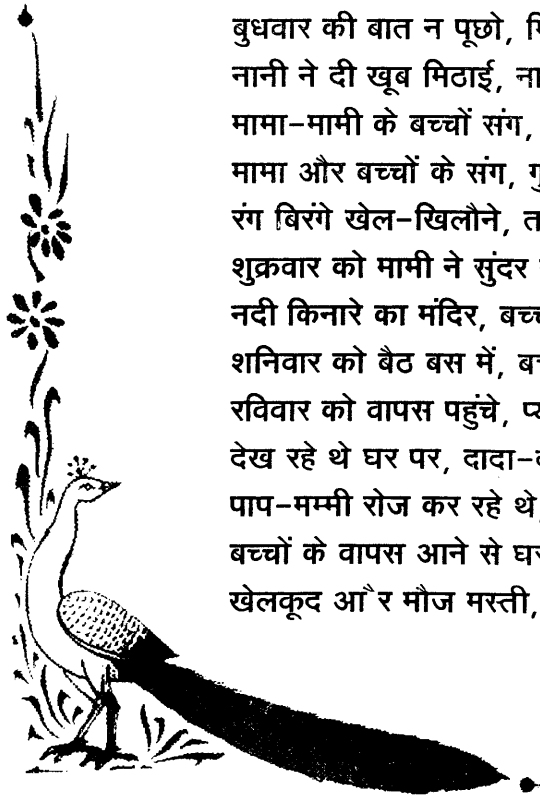
बारह मासा

माह जनवरी लेकर आता, नववर्ष का शुभसंदेश
 मकर संक्रांति और गणतंत्र दिवस आते लेकर खूब उमंग
 माह फरवरी से हो जाती परीक्षाओं की शुरुवात
 खेलकूद घूमना कम कर, बच्चे पढ़ने में होते व्यस्त
 मार्च महीना लेकर आता, रंगीली होली अपने संग
 भाईचारे मेलजोल के रंग, भरते तन-मन में उमंग
 बढ़ जाती गरमी अप्रैल मास से, बढ़ती शादीयों की हलचल
 परवाह किसे गरमी की होती, होते रहते हैं शुभमंगल
 तपता मई मास से सूरज, कहता निकलो ना घर से बाहर
 लंबी दुपहरिया में बच्चों, खेलो सोओ घर के अंदर
 मई-जून की लंबी छुट्टियां, बच्चों को मन भाती
 नये नये स्थान देखने, उनको है उकसाती
 प्यासी धरती बाट जोहती, वर्षा की पहली फुहार का
 भीगे तनमन, नाच उठे मन मोर सभी का
 माह जुलाई से होती जोरों की बरसात
 हरियाली की चादर की मिलती, धरती को सौगात
 माह अगस्त गुनगुनाता आता, आजादी की दास्तान
 हर जगह लहराता तिरंगा, करते सब उसका सम्मान
 माह सितंबर में होती त्यौहारों की बरसात
 पधारे गणपति घर-घर, भर देते मन में उल्लास
 अक्टूबर-नवंबर लेकर आते, पूजा, दशहरा और दीपों का त्योहार
 दीपों की जगमग से खिल उठता, हर आंगन हर द्वार
 माह दिसंबर लेकर आता, क्रिसमस का त्योहार
 शालाओं में स्नेहसम्मेलन भरते, बच्चों में स्फूर्ति अपार



गर्मी की छुट्टियां

सोमवार से शनिवार तक, हुई परीक्षा भाई
रविवार से लगी छुट्टियां, गर्मी भी है आई
मुन्ना-मुन्नी मिलकर सोचें, खूब मजे अब भाई
खेले कूदे, सुने कहानी, खायें दूध मलाई
सोमवार से मुन्ना-मुन्नी, लगे मनाने छुट्टियां
रखा किताबों को अंदर और, की घूमने की तैयारियां
मंगलवार को बैठ बस में, चल दिए ननिहाल
बुधवार की बात न पूछो, मिले नाना-नानी खुशहाल
नानी ने दी खूब मिठाई, नाना से सुनी कहानी
मामा-मामी के बच्चों संग, मिलकर करी खूब शैतानी
मामा और बच्चों के संग, गुरुवार को देखा मेला
रंग बिरंगे खेल-खिलौने, तरह-तरह का झूला
शुक्रवार को मामी ने सुंदर मंदिर दिखलाया
नदी किनारे का मंदिर, बच्चों को मन भाया
शनिवार को बैठ बस में, बच्चे चले ननिहाल से
रविवार को वापस पहुंचे, प्यारे से अपने घर में
देख रहे थे घर पर, दादा-दादी उनकी राह
पाप-मम्मी रोज कर रहे थे, उनकी याद
बच्चों के वापस आने से घर में बढ़ी चहल-पहल
खेलकूद और मौज मस्ती, करते बच्चे हरपल



आरोग्य परी का संदेश

(एक छोटे गांव की पृष्ठभूमि : मामूली कच्चा घर, ग्रामीण पुरुष, बच्चें व स्त्रीयां)

आवाज नेपथ्य में : मैं आयी नव संदेश, नव जागरण लायी

ग्रामवासी : अरे, यह किसकी आवाज है ... कौन आया ...

श्वेत परी के परिधान में नन्हीं बालिका का प्रवेश
साथ में शाला के बच्चे

मैं हूँ एक आरोग्य परी, लेकर आयी कुछ संदेश

एक ग्रामवासी : अरे, तुम्हारे साथ पाठशाला के बच्चे भी हैं ।

आरोग्य परी : मैं हूँ नन्हीं स्वस्थ परी,

आयी लेकर संदेश यही,

भारत का हर इंसान हो सबल, स्वस्थ और रोग मुक्त

हुँ तो नन्हीं-सी परी मैं, मुझे लगे हैं ज्ञान पंख

है चाहत मेरी यही सदा

करुं अच्छे काम सदा

पहुँच जाती मैं वहां-वहां

होती जरूरत जहां-जहां,

ज्ञान पंखों पर हो सवार

मैं फिरती रहती द्वार-द्वार ।

ग्रामवासी : अच्छा बहुत खूब ।

परी : आ पहुँची आज मैं, इस गांव की शाला के पास

मिल गये जहां, मुझे प्यारे दोस्त आसपास

कहा उन बच्चों से चलो चलें हम साथ-साथ

ग्रामवासियों को बतलायें स्वास्थ्य का राज ।

एक ग्रामीण महिला : आओ बेटा, घर में आओ,

(नेपथ्य में : छोटे बच्चे के रोने का स्वर)

आरोग्य परी : प्रणाम दादाजी-दादीजी,

क्या आपके घर पर आया
नन्हा मेहमान जन्म लेकर
रोना उसका दे रहा सुनायी
लगता भूख उसे लग आयी
माता तो वह ही उत्तम है,
जो लें स्वयं पोषक आहार
शिशु को स्तन पान करायें
रखे उसे रोगों से दूर
साफ-सुथरा रखे शिशु को
रखे परिसर को सदा स्वच्छ
नियमित आरोग्य केन्द्र पर जायें
समय-समय पर टीके लगवायें
और पोलियो की दवा पिलायें

पुरुष व स्त्री : तुम तो बड़ी अच्छी-अच्छी बातें बतला रही हो ।

आरोग्य परी : हां दादाजी-दादीजी आपसे है एक प्रार्थना

सभी बच्चों को नियमित रूप से भेजें पाठशाला
पायें सभी शिक्षा, बालक हो या बालिका
गांव में वृक्षों का हो सदा संगोपन
नये वृक्ष लगायें गांव का हर घर
परिसर रखे गांव का सदा स्वच्छ
गांव रहे स्वस्थ बच्चों से गुलजार सदा

सभी लोग एक स्वर में : वादा तुमसे आरोग्य परी, हम सबका

याद रखेंगे सदा, तुम्हारी अच्छी बातों का
अमल करेंगे इन अच्छी बातों पर,
स्वस्थ, शिक्षित होगा हर घर ।



विरासत

पुराने समय की बात है, जब आज की तरह स्कूल और कॉलेज हर जगह नहीं थे। उस समय अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए उनके माता-पिता उन्हें गुरु के आश्रम में भेज देते थे। जहां वे गुरु के साथ दिन-रात रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। ऐसे ही एक आश्रम में तीन शिष्य थे। उनमें एक राजकुमार था, एक व्यापारी का लड़का तथा एक कृषक का लड़का था। तीनों अच्छे दोस्त थे और पढ़ने-लिखने में भी तेज थे।

गुरु से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। गुरु ने उनकी परीक्षा लेने की सोची व एक दिन सबेरे-सबेरे तीनों को बुलाकर एक-एक मुट्ठी चना देकर कहा, इसे संभालकर रखो। मैं दो वर्ष के लिये तीर्थ यात्रा पर जा रहा हूँ। तुम्हें इस बीच आश्रम की ठीक से देखभाल करनी है और जब मैं वापस आऊंगा तो गुरु दक्षिणा देते समय मुझे ये चने वापस करना, कहकर गुरुजी तीर्थाटन करने को चले गये।

राजकुमार बहुत उदार प्रवृत्ति का था। उसने देखा था कि उसके पिता अपनी प्रजा की अच्छी तरह से देखभाल करते हैं और विद्वानों का बहुत आदर करते हैं। उसने सोचा कि ये चने तो दो वर्ष में खराब हो जायेंगे, मैं इन्हें पक्षियों को खिला देता हूँ। गुरुजी के आने पर मैं उन्हें सोने के चने गुरुदक्षिणा में दूंगा। व्यापारी पुत्र ने अपने पिता से धन को सहेजकर रखने की विरासत पाई हुई थी। उसने गुरुजी की अमानत को सुरक्षित रखने के लिए उन चनों को एक मिट्टी के बरतन में रखकर उसे अच्छी तरह से सीलबंद कर दिया, ताकि चने खराब न हो पाये।

कृषक पुत्र ने अपने पिता को खेतों में अनाज बोते और उगाते देखा था। उसने कुछ जगह साफ करके वहां चने बो दिए

और उनकी नियमित देखभाल करने लगा। चने की अच्छी फसल हुई तो उसने फिर से पूरे चने जमीन में बो दिये। दो वर्षों बाद उसके पास चनों का अच्छा भंडार हो गया। उसने उन्हें मिट्टी के पात्रों में भरकर रख दिया।

दो वर्ष बाद गुरुजी तीर्थाटन से वापस लौटें। शिष्यों ने उन्हें प्रणाम किया व उनकी सेवा की। दूसरे दिन गुरुजी ने उन्हें बुलाकर कहा कि अब तुम लोगों के घर जाने का समय आ गया है। मैंने तुम लोगों को जो चने दिये थे वे मुझे वापस लाकर दो। राजकुमार ने चनों के बदले सोने के चने गुरुदक्षिणा में दिये तो गुरुजी ने पूछा मेरे दिये चनों का क्या किया? राजकुमार ने कहा, मैंने उन्हें पक्षियों को खिला दिया, नहीं तो वे खराब हो जाते।

व्यापारी पुत्र ने मिट्टी के पात्र में सुरक्षित रखे चने गुरुजी को लाकर दिये और बताया कि उसने चनों को कैसे सुरक्षित करके रखा था। किसान पुत्र ने कहा गुरुजी आपके दिये हुये चने यहां नहीं लाये जा सकते। आप कृपया मेरे साथ चलिये ताकि मैं आपको चने का भंडार सौंप सकूं।

गुरुजी ने जाकर चनों का भंडारण देखा तो वे बहुत खुश हुए और तीनों शिष्यों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटा तुम लोगों ने अच्छी शिक्षा के साथ ही साथ अपने पैतृक गुणों को भी संभालकर रखा है। जो कि व्यवहारिक जीवन में बहुत आवश्यक है। तुम प्राप्त शिक्षा का सदुपयोग व अपरे पैतृक गुणों का उपयोग करके अपने-अपने क्षेत्र में उन्नति करोगे।



सब्जी पार्क में मुनिया

मां, मां मुझे हरी सब्जियां बिलकुल अच्छी नहीं लगती, छोटी मुनिया ने जिद करते हुए कहा, मुझे खाना नहीं खाना है। टिफीन में भी मैं हरी सब्जी नहीं ले जाऊंगी। आखिर आप रोज-रोज भिंडी, तुरई, कद्दु, बैंगन, पालक क्यों बनाती हैं। मुनिया ने रोते-रोते कहा और रात का खाना बिना खाये ही उठ गई। उसके इस व्यवहार से मां बहुत दुःखी हुई और उन्होंने उसे प्यार से समझाया कि सब्जियां खाना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। परंतु जिद्दी मुनिया मां का कहना न सुनते हुए सो गई।

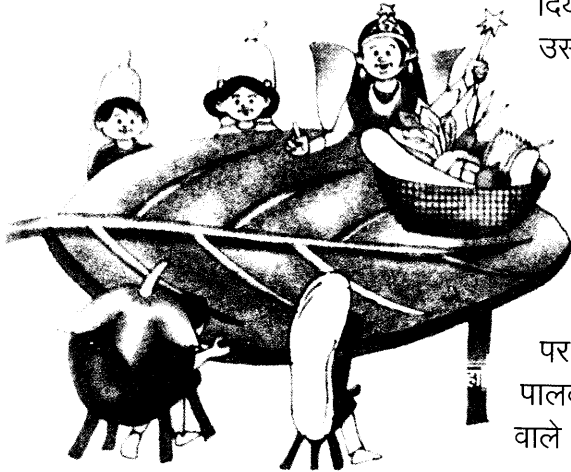
आधी रात के बाद उसे खूब जोर की भूख लगी। मजबूर होकर वह रसोईघर में गई और कद्दु की सब्जी और रोटी खाने बैठ गई। भूख लगी होने की वजह से उसे खाना बहुत स्वादिष्ट लगा और पेट भर जाने पर उसे गहरी नींद आ गई।

अचानक उसे लगा कि वह बहुत बड़े पार्क के गेट के बाहर खड़ी है। सब्जी पार्क में बच्चों का स्वागत है, कहते हुए हरे परिधान वाली एक छोटी परी ने उसे अंदर आने का निमंत्रण

दिया तो वह खुश होकर उसके साथ अंदर चली गई।

परी उसे उस पार्क के बीचों बीच लेकर गई, जहाँ पर बहुत बड़े कद्दु के जैसी दिखने वाली एक कुटिया बनी थी।

कुटिया के भीतर जाने पर उसने देखा कि बड़े से पालक के पत्ते जैसे दिखने वाले एक टेबल के चारों ओर



भिंडी, तुरई, लौकी व अन्य सब्जियों के आकार को दर्शाती छोटी बड़ी कुर्सीया रखी थी और उन पर कुछ बच्चे बैठे हुए थे।

टेबल पर अलग-अलग तरह की हरी शाक-सब्जियां टोकरीयों में सजाकर नाम सहित रखी हुई थी और एक छोटी-सी परी बच्चों को सब्जियों के बारे में मनोरंजक जानकारी दे रही थी।

मुनिया को यह सब देखकर बड़ा मजा आया। परी के साथ घूमते-घूमते मुनिया ने देखा कि एक जगह एक फेंसी ड्रेस का आयोजन था, जिसमें बच्चें अलग-अलग शाक-सब्जियों को दर्शाने वाली पोशाखें पहिनकर घूम रहे थे। उन बच्चों को देखकर मुनिया को बड़ा आनंद आया। थोड़ा और घूमने के बाद परी ने कहा मुनिया तुम्हें भूख लग गई होगी, चलो कुछ खाते हैं। ऐसा कहकर परी उसे खाने के स्टालों पर ले गई, जहां पर गाजर का हलवा, पालक के पकौड़े, सरसों की भाजी, भरवां भिंडी, मेथी के परांटे, चटनीयां और बहुत-सी खाने-पीने की चीजें हरी सब्जियों से बनी हुई मिल रही थी। बच्चे अपनी मनपसंद चीजें स्वाद ले-लेकर खा रहे थे।

खा-पीकर परी उसे पार्क के अंदर वाले हिस्से में लेकर गई, जहां अलग-अलग सब्जियों को उगाने की व्यवस्था की गई थी। वहाँ घूम-घूम कर उसे सब्जियों के बारे में बहुत-सी नई-नई जानकारी प्राप्त हुई।

उसका मन खुशी से झूम उठा, जब उसे एक छोटे बालक ने वहा के हरे मटर तोड़कर खाने के लिए दिये। वाह, क्या अच्छे मटर हैं, मां, मां आप भी यहां आ जाइयें ना, इतनी अच्छी मटर तो मुझे पहली बार खाने मिली है। मां, मां, की आवाज सुनकर मुनिया की मां ने उसे उठाया और कहा कि बेटी तुम सपना देख रही थी और मुझे आवाज दे रही थी। मुनिया ने कहा, हां मां, मैंने आज बहुत अच्छा सपना देखा उसने मां से सपने की सभी बातें बताई और वादा किया कि आगे से वह सभी सब्जियों को स्वाद से खायेगी।



इंद्रधनुष

बरसात के दिन थे । थोड़ी देर पहले ही पानी बरसा था । हिमाली शाला की छुट्टी के बाद पैदल ही घर की तरफ जा रही थी । अचानक उसका ध्यान आसमान की ओर गया । जहां पर बहुत सुंदर इंद्रधनुष दिखाई दे रहा था । उसे देखते-देखते ही वह घर पहुंच गई और खेलकूद कर रात्रि के भोजन के बाद उसे नींद आ गई ।

अचानक उसे लगा कि, कोई उससे कह रहा है हिमाली, चलो घूमने चलें । उसने आंखें खोली तो देखा, सिरहाने ही एक सुंदर सी सफेद परी खड़ी है । परी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे ले उड़ी । कुछ दूर नीले आसमान में उड़ते-उड़ते वे लोग एक सुंदर बाग में पहुंचे । जहां पर हर रंग के फूल पौधे थे ।

बैंगनी रंग के फूलों के पास एक छोटी-सी बैंगनी पंखों से सजी हुई परी खेल रही थी, जैसे कोई तितली

फूलों पर मंडरा रही हो । उसे साथ लेकर सफेद परी आगे बढ़ी । एक जगह आसमानी रंग के फूलों के बीच आसमानी पंखों की परी खेल रही थी । वे उसे भी साथ लेकर आगे बढ़ीं । जहां पर

उन्हें नजर आयी नीले फूलों की क्यारियों के बीच इठलाती, नील परी । उसे देखकर हिमाली को खूब खुशी हुई ।

सफेद परी उसे भी साथ लेकर आगे बढ़ी । जहां पर हरी दूब का सुंदर सा लॉन था ।



वहां पर हरे पंखों वाली परी खेल रही थी। थोड़ी दूर पर बहुत सारे पीले गेंदे के फूल खिले थे। जहां पीले पंखों वाली परी उनकी सुंदरता देख रही थी। उसे भी साथ लेकर सभी नारंगी के पेड़ों के बीच जमा हो गये। जहां नारंगी पंखों वाली परी को लाल पंखों वाली परी लाल गुलाबों का गुच्छा दे रही थी। इन्हें देखकर सफेद परी और उसके साथ आई अन्य परियों को बहुत खुशी हुई।

सबने मिलकर नाचने की सोची। सफेद परी और हिमानी को बीच में रखकर सातों परियां उनके चारों ओर तेजी से घूम-घूमकर नाचने लगी, तो अचानक हिमाली को लगा कि सभी परियां गायब हैं और केवल एक सफेद चक्कर ही दिखाई दे रहा है। उसने जोर से सफेद परी को पुकार कर कहा कि, बाकी परियां उसे नहीं दिखाई दे रही हैं। अचानक परियों ने नाचना-घूमना बंद कर दिया, तब वे हिमानी को फिर से दिखाई देने लगी। सफेद परी ने उसे समझाया कि सफेद प्रकाश सात रंगों के मिलने से बनता है और जब यह प्रकाश पानी की बूंदों से निकलता है तो हमें सात रंग का इंद्रधनुष दिखाई देता है।

अब हिमाली को इंद्रधनुष का रहस्य समझ में आ गया था। अचानक उसे लगा कि वह तो अपने बिस्तर पर सोई हुई सपना देख रही थी और पापा उसे उठाते हुए कह रहे थे, उठो बेटा, सबेरा हो गया।

उस दिन शाला में जाकर हिमाली ने अपने सपने और इंद्रधनुष की कहानी कक्षा में सुनाई। टीचर और सहपाठियों को उसकी कहानी खूब पसंद आयी।



माली बाबा

शाम का समय था। श्याम अपनी पाठशाला से पढ़कर वापस घर की ओर जा रहा था। रास्ते में ही फलों का एक छोटा-सा बगीचा था। श्याम को प्रतिदिन उस बगीचे के पास से जाना बहुत अच्छा लगता था।

उस दिन जब वह बगीचे के पास से निकला तो उसे वहाँ पर एक माली बाबाजी दिखाई दिये, जो फल बेच रहे थे। श्याम ने जाकर उनसे कुछ फल खरीदे व उनसे बातचीत करने लगा तथा बगीचे को अंदर से देखने की इच्छा प्रकट की। माली बाबा ने उसे बहुत प्यार से अपना बगीचा दिखाया। उस दिन से श्याम और माली बाबा अच्छे दोस्त बन गये। श्याम माली बाबा का बहुत आदर करता था और अक्सर ही उनसे मिलता रहता था। एक दिन वह बगीचे के पास से गुजरा तो उसे बाबा दिखाई नहीं दिये। उसने अंदर जाकर देखा तो पाया कि बाबा को तेज बुखार है और वे बिस्तर पर से उठ नहीं पा रहे थे।

श्याम ने देखा कि बाबा अकेले हैं व उनकी दवा लाने के लिए भी कोई पास नहीं है। वह तुरंत अपने घर गया तथा अपनी माताजी से सब बताकर दवा के लिये पैसे तथा डॉक्टर की व्यवस्था करके आया। कुछ दिनों के उपचार के बाद बाबा ठीक हो तो गये परंतु वे कमजोर हो गये



थे तथा अपने बगीचे की देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहे थे ।

श्याम ने अपने कुछ मित्रों से सलाह की तथा अपने दोस्तों के साथ रोज पाठशाला के बाद बाबा के बगीचे में जाकर पेड़-पौधों की देखभाल करने लगा । एक दिन बच्चों ने देखा कि बाबा आम के नये पौधे लगा रहे थे । उन्होंने बाबा से कहा कि आप तो अब बूढ़े हो गये हैं, इनके फल तो आप नहीं खा पायेंगे । तब बाबा ने समझाया, बच्चों जो आम या अन्य फल आज मैं और तुम खा रहे हैं उसे भी कभी मेरी जैसी उम्र वाले व्यक्ति ने ही लगाया होगा । पौधें लगाना और उनकी देखभाल करना बहुत ही पुण्य का काम है, क्योंकि इसमें हम अपने साथ-साथ दूसरों का भी भला करते हैं और अपने पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं । क्योंकि जितने ज्यादा पेड़ होंगे उतनी ही वायु भी शुद्ध होगी तथा वर्षा का होना भी हरे-भरे पेड़ों पर निर्भर होता है । जंगलों की कटाई और नये पेड़ों के न लगाने के कारण वर्षा कम होती है जिससे सूखा और अकाल की स्थिति उत्पन्न होती है । बाबा की इन बातों का बच्चों पर बहुत असर पड़ा और उन्होंने निश्चय किया कि अपनी पाठशाला के आसपास के परिसर को वे सभी मिलकर हरा-भरा बनायेंगे ।

एक दिन श्याम माली बाबा को लेकर शाला के प्रधानाचार्य के पास गया और बच्चों के निश्चय के बारे में बताया तो वे बहुत प्रसन्न हुए और इस काम में अपना मार्गदर्शन तथा सभी संभव सहायता देने की बात कही । फिर क्या था, शाला की बालक सेना और माली बाबा के साथ मिलकर आसपास के परिसर को हरा-भरा बनाने की योजना बनाई और सभी काम में जुट गये । गर्मी की छुट्टियों का सही उपयोग कर वर्षा ऋतु के आने पर नये पौधों का वृक्षारोपण कर उसकी देखभाल का जिम्मा बच्चों ने उठाया और उसे पूरा किया । बच्चों की मेहनत रंग लाई और कुछ ही वर्षों में उनकी शाला का परिसर हरा-भरा हो गया ।



कर भला, हो भला

नीती अपने माता-पिता की प्यारी दुलारी बेटि थी। उम्र थी उसकी दस वर्ष, स्वभाव से बहुत ही दयालु और नेक इस बच्ची को उसके परिवार व पड़ोसी सभी बहुत प्यार करते थे। नीती समय की बहुत पाबंद थी और ठीक समय पर स्कूल पहुंचना उसकी आदत थी। एक दिन वह स्कूल जाने के लिये घर से निकली तो उसने चौराहे के पास एक बूढ़ी महिला को भारी थैला लेकर जाते देखा। अचानक ही वह महिला वहां पर ठोकर खाकर गिर पड़ी। नीती ने तुरंत दौड़कर उन्हें सहाया दिया। बूढ़ी दादी को चक्कर आ रहे थे। नीती ने तुरंत एक रिक्शेवाले को आवाज दी और दादी से उनके घर का पता पूछकर उन्हें घर तक पहुंचा दिया। घर जाकर दादीजी को थोड़ा आराम करने के बाद अच्छा लगने लगा। उन्होंने नीती को बहुत प्यार किया और कहा कि तुम बहुत दयालु बच्ची हो। हमेशा अच्छे काम करते रहना, जो दूसरों की सहायता करते हैं भगवान सदा उनका साथ देता है।

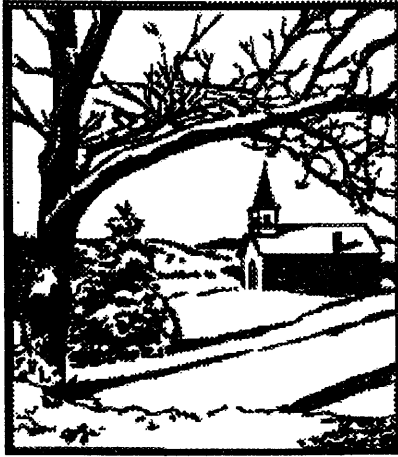


कुछ दिनों बाद नीती अपने स्कूल जा रही थी कि अचानक एक स्कूटर वाले की उससे टक्कर हो गई। जिससे नीती वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी। उसके चारों तरफ लोगों की भीड़ जमा हो गई। पर कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आ रहा था। इतने में वहां पर एक सज्जन आये और नीती को गोद में उठाकर अपनी कार से अस्पताल लेकर गये व उसका उपचार करवाया तथा

उसके माता-पिता को भी खबर की। होश में आने पर नीती को पता चला कि वह अस्पताल में भर्ती है और उसे लाने वाले सज्जन उसके पास ही बैठे थे। नीती उन्हें नहीं पहचानती थी, परंतु उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले जब तुम बूढ़ी दादी की सहायता कर रही थी, तब मैं तुम्हारे पीछे-पीछे ही आ रहा था। मुझे तुम्हारा दयालु स्वभाव देखकर बहुत प्रसन्नता हुई थी। वह बूढ़ी दादी मेरी चाचीजी है और मैं उनसे मिलने के लिए उनके घर जा रहा था।

थोड़ी देर बाद नीती के माता-पिता और वह बूढ़ी दादी भी अस्पताल में पहुंच गये और उस सज्जन को धन्यवाद दिया। सभी ने नीती को बहुत प्यार किया और दादीजी ने कहा- कर भला हो भला।





चले गांव की ओर

राम, श्याम, मनोहर और सुरेश बचपन के दोस्त थे। एक गांव में पैदा हुए, वहीं पर उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। बड़े होकर वे अलग-अलग जगहों पर आगे पढ़ने के लिए चले गये। राम ने शिक्षक की ट्रेनिंग ली, श्याम ने डॉक्टर की पढ़ाई की, मनोहर ने खेती संबंधी आधुनिक शिक्षा प्राप्त की तथा मनोहर

इंजीनियर बन गया।

इन चारों मित्रों ने पहले से ही सोच रखा था कि पढ़ाई पूरी करने के बाद वे अपने गांव वापस आकर गांव की उन्नति में अपना योगदान देंगे।

उस गांव में न तो हायस्कूल था, न ही अच्छा अस्पताल। वहां के निवासी सिर्फ अपनी खेती करते और छोटे-मोटे काम करके अपनी जीविका चलाते।

चारों मित्रों ने मिलकर एक योजना बनाई। वे गांव के बुजुर्गों से मिले व उन्हें गांव में स्कूल व अस्पताल की जरूरत समझाई व उनसे सहायता व मार्गदर्शन मांगा। गांव के लोगों ने उन्हें यथासंभव सहायता देना मंजूर किया।

मनोहर के पिता के पास काफी खाली जमीन थी, जिस पर खेती नहीं की जाती थी। उन्होंने स्कूल व अस्पताल बनाने के लिए जमीन दान में दे दी। गांव के सभी लोगों ने यथासंभव चंदा इकट्ठा करके स्कूल व अस्पताल की इमारत के लिये धन जुटाया।

इंजीनियर सुरेश ने अपनी देखरेख में कम लागत की परंतु मजबूत व हवादार इमारत शाला व अस्पताल बनाने के

लिए का काम प्रारंभ कर दिया ।

राम और श्याम ने मिलकर गांव के बच्चों व अन्य निरक्षर लोगों को शिक्षा की आवश्यकता के बारे में समझाया और उन्हें शाला में पढ़ने के लिए प्रेरित किया कुछ ही दिनों में पाठशाला में बच्चों का आना प्रारंभ हो गया तथा राम ने शाला की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली ।

श्याम ने गांव के लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना प्रारंभ किया तथा अस्पताल खोलकर मरीजों की सेवा करने लगा । चारों मित्र गांव के लोगों को परिसर की स्वच्छता, वृक्षों के संरक्षण, शुद्ध पानी और हवा के बारे में अक्सर बतलाते रहते थे ।

मनोहर ने अपने सीखे हुए कृषि ज्ञान का उपयोग गांव के किसानों के लिए करना शुरू किया, जिससे उनकी उपज में बढ़ोतरी हुई ।

इन चारों मित्रों की एकता व परिश्रम देखकर गांव के अन्य लोग भी इनका साथ देने लगे और सबने मिलकर गांव की सड़कों को श्रमदान से अच्छा बनाने का कार्य खुशी-खुशी किया । रास्ते के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगाने व उनका संरक्षण करने की जिम्मेदारी गांव के बालकों व युवा वर्ग ने संभाल ली ।

गांव साफ-सुथरा रखने के उद्देश्य से प्रत्येक घर में शौचालय और हर किसान के घर गोबर गैस के प्लांट बनवाने की योजना भी बनाई । सरकारी सहायता, गांववालों के श्रमदान व सहयोग के फलस्वरूप कुछ वर्षों में ही गांव का कायाकल्प हो गया व इस गांव को आदर्श गांव के रूप में जाना जाने लगा ।

गांव में कई लघु उद्योग भी खोले गये जिससे गांव के लोगों को काम मिला व उनका जीवन स्तर पहले से अधिक अच्छा हो गया ।



अलादिन का चिराग

सुरेश एक गरीब, मेहनती लड़का था। वह ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। कमाने-खाने के लिए उसके पास सिर्फ एक हाथटेला था। जिसे लेकर वह घर-घर से कबाड़ खरीदता व उसमें से कामचलाऊ वस्तुओं को अलग कर ठीक करता व उन्हें फिर से कम दामों पर बेच देता।



इस तरह वह कठिनाई से जीवन यापन कर रहा था। उसे पढ़ने-खिलने का बड़ा शौक था। परंतु गरीबी के कारण वह चौथी कक्षा से आगे नहीं पढ़ पाया था।

उसे जब भी कबाड़ में पुरानी किताबें या पत्रिकाएँ मिलती, उन्हें दुबारा बेचने से पहले वह अवश्य पढ़ता और कुछ सीखने का प्रयास करता रहता।

एक दिन उसने एक किताब में अलादिन के चिराग की कहानी पढ़ी, उसे बहुत मजा आया।

उस रात वह यह सोचते हुए सो गया कि काश, मेरे पास भी ऐसा चिराग होता, तो मेरी जिंदगी बदल जाती। उसे नींद में ऐसा लगा कि कोई उसे उठा रहा है और कह रहा है, बेटा उठो। उसने देखा कि एक बुजुर्ग सज्जन श्वेत वस्त्र पहने हुए खड़े हैं और उससे कह रहे हैं बेटा तुम इतने निराश क्यों हो, ईश्वर ने तुम्हें इतना अच्छा दिमाग और स्वस्थ शरीर दिया है। यही तो है अलादिन का चिराग, जिसका सही उपयोग करके तुम अपनी जिंदगी में सफल हो सकोगे।

मेहनती तो तुम हो ही, आशावादी बनकर प्रयत्न करो तो अवश्य ही तुम आगे प्रगति करोगे। इतना सुनते ही अचानक उसकी नींद खुल गई और उसे समझ में आया कि वह बहुत ही अच्छा सपना देख रहा था। सुबह हो चुकी थी। उसे प्रण किया

कि वह इस सपने को सच करके रहेगा ।

प्रतिदिन की तरह वह अपना ठेला लेकर कबाड़ खरीदने निकला । अचानक एक बुजुर्ग सज्जन ने उसे बुलाकर रद्दी अखबार लेने के लिए कहा । उसमें कुछ पत्रिकायें भी थी । सुरेश उन्हें ध्यान से उलट-पुलट कर देखने लगा । उस सज्जन ने उसकी जिज्ञासा देखकर पूछा, क्या तुम पढ़ना जानते हो और क्या आगे पढ़ना चाहते हो ? सुरेश ने उन्हें अपने बारे में बताया कि गरीबी के कारण वह काम करके जीवन निर्वाह करता है और चाहते हुए भी नियमित रूप से पाठशाला नहीं जा सकता ।

उस सज्जन ने उसे ओपन स्कूल के बारे में बताया व घर बैठे ही आगे की पढ़ाई करने तथा अपनी पंसद का व्यवसाय सीखने के बारे में बताते हुए मदद करने की बात कही ।

उस दिन से सुरेश अपने खाली समय में उन सज्जन के पास जाने लगा और अपनी पढ़ाई तथा व्यवसाय के संबंध में मार्गदर्शन लेता रहा । शीघ्र ही सुरेश ने अपनी पढ़ाई और मेहनत के बल पर छोटा-सा वर्कशॉप खोल लिया । जहां वह हर तरह की गाड़ीयां सुधारने का काम करता था । शीघ्र ही वह एक कुशल मेकेनिक बन गया । लोग उसके काम की तारीफ करते और अपनी गाड़ीयां उससे ही ठीक करवाते ।

आगे चलकर सुरेश ने पुरानी गाड़ीयां कम दामों पर खरीदकर व उन्हें सुधारकर फिर से बेचने का काम शुरू कर दिया । उसका काम इतना बढ़ गया कि उसे काम करने के लिए सहयोगियों की जरूरत महसूस होने लगी ।

उसने अपने जैसे ही मेहनती दोस्तों का साथ लिया और मिल-जुलकर काम करने लगे ।

कुछ ही समय में उसकी मेहनत रंग लाई और सुरेश एक बड़े वर्कशॉप का मालिक बन गया । सुरेश हमेशा अपने सहयोगियों से कहता कि कड़ी मेहनत व ज्ञान का सही उपयोग ही अलादिन का जादुई चिराग है, जो हमारी तकदीर बदल देता है ।



राजा बेटा और परी रानी

एक शहर में एक अमीर परिवार रहता था। उस परिवार में एक ही बच्चा था। प्यार से सब उसे राजा कहते थे और उसे बहुत लाड़-प्यार करते थे व उसकी हर जिद पूरी करते थे। उसे कभी भी घर का कोई सदस्य डाँटता नहीं था, इसीलिए जब भी कोई उसे समझाता, किसी बात के लिये मना करता अथवा डाँटता तो उसे बहुत गुस्सा आता और वह मुंह फुलाकर बैठ जाता था। घर के लोगों को उसकी इस आदत से बड़ा दुःख होता था।

एक बार उनके घर में दादा-दादी की उम्र के रिश्तेदार कुछ दिनों के लिए रहने आये। वे भी राजा को बहुत प्यार करते व अच्छी-अच्छी बातें सिखाते थे।

एक दिन राजा उन दादा-दादी के साथ भोजन करने बैठा। खाते समय उसने अपनी प्लेट में बहुत-सी चीजें परोस ली परंतु उन्हें खाया नहीं व वैसे ही छोड़कर उठ गया। मेहमान दादीजी ने उसे समझाया कि अच्छे बच्चे खाने को बर्बाद नहीं करते। तो वह मुंह फुलाकर बैठ गया। जब राजा पढ़ने के लिए बैठा तो उसे अपनी किताबें जगह पर नहीं मिली, क्योंकि वह कहीं पर भी अपनी वस्तुएं फैला कर रख देता था। उस दिन उसका होमवर्क पूरा न होने तथा कॉपी फटी होने के कारण पाठशाला में उसकी टीचर ने उसे खूब डांट लगाई। उस दिन घर आकर राजा बहुत रोया। दादीजी ने उसे खूब समझाया और अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाई तो वह कहानी सुनते-सुनते सो गया।

अचानक उसे लगा कि उसके सिरहाने कोई खड़ा है और कह रहा है, चलो राजा घूमने चलेंगे। उसने आंख खोली तो एक सुंदर परी उसे जगा रही थी। जिसके पंख सुनहरे थे। परी उसका हाथ पकड़कर उड़ने लगी। सबसे पहले परी उसे शहर के उस भाग में ले गई जहां पर अमीर लोग रहते थे और उसे घरों के अंदर के दृश्य दिखलाने लगी।

इन अमीर घरों के बच्चों के पास खाने और खेलने के लिए बहुत सारी चीजें थी, जिसे व मनमाने ढंग से उपयोग कर रहे

थे, खिलौने तोड़ रहे थे और खाना बर्बाद कर रहे थे।

उसके बाद परी ने उससे कहा कि राजा अब मैं तुम्हें ऐसी जगह ले जा रही हूँ जहाँ तुम कभी नहीं गये। वे लोग गरीबों की बस्ती में गये, जहाँ लोग दिन भर मजदूरी करते थे उसके बाद भी अपने परिवार को भर पेट भोजन नहीं खिला पाते थे, कपड़े व खिलौने तो उनके लिये मानों बने ही नहीं थे। राजा ने एक घर में देखा कि एक छोटा बच्चा रोटी के लिये रो रहा है, परन्तु उनके घर में थोड़े से चावल के अलावा कुछ भी नहीं था। एक घर में एक बच्चा किताबों के लिये रो रहा था तो किसी घर में बच्चा नये बस्ते के लिये रो रहा था। परन्तु गरीबी के कारण उनके मां-बाप उन्हें आवश्यक चीजें भी खरीद कर नहीं दे पाते थे। उसके बाद परी उसे एक और झोपड़ी में ले गई जो बाकी झोपड़ियों से साफ-सुथरी थी और वहां पर एक स्त्री कपड़े सिल रही थी और पास में उसका बच्चा स्कूल की पढ़ाई कर रहा था। ये लोग गरीब थे परन्तु बहुत ही सलीके से रहते थे। बच्चे की कॉपी-पुस्तकें अच्छी तरह से रखी हुई थी और वह बच्चा बहुत सुंदर अक्षरों में अपना होमवर्क कर रहा था।

बहुत देर तक परी के साथ घूमते-घूमते राजा को नींद आने लगी तो परी ने उसे वापस लाकर उसके बिस्तर पर सुला दिया। अचानक राजा को लगा कि मम्मी उसे उठा रही थी। वह जल्दी से उठा और मम्मी से पूछा कि परी रानी कहाँ है, मैं तो रात भर उनके साथ घूमता रहा। तो मम्मी ने कहा कि बेटा परियां तो सिर्फ सपनों में आती हैं और बच्चों को अच्छी-अच्छी बातें सिखाती व प्यार करती हैं।

राजा ने कहा- हां मम्मी, मुझे समझ में आ गया है कि परी रानी मुझे क्या सिखाना चाहती थी। अब से मैं चीजों को अच्छी तरह से काम में लाऊंगा और उन्हें बर्बाद नहीं करूंगा, ताकि दूसरों को भी उसका फायदा मिल सके। उस दिन से वह सचमुच राजा बेटा जैसे सलीके से रहने लगा और घर के तथा बाहर के लोग उसे और ज्यादा प्यार करने लगे।



प्रेरणा

एक गांव में एक किसान परिवार रहता था । किसान पति-पत्नी अपने खेतों में खूब मेहनत करते थे । परंतु उनका बेटा नन्दू बहुत ही आलसी था । हर काम में टालमटोल करता था । उसके माता-पिता उससे बहुत परेशान रहते थे ।

एक बार नन्दू सबेरे-सबेरे घूमने निकला । उसे एक झोपड़ी के सामने एक काफी बूढ़ा आदमी दिखाई दिया । जो एक गढ़वा खोद रहा था । उसने उनके पास जाकर पूछा, बाबाजी आप क्या कर रहे हैं ?

बाबाजी ने उत्तर दिया मैं छोटे-छोटे गढ़वे खोद रहा हूं । जिनमें मैं आम और नीम के पेड़ लगाऊंगा । नन्दू ने कहा, बाबाजी आप तो बूढ़े हो गये हैं, इन पेड़ों से आपको क्या फायदा होगा । आपको तो इनकी छाया और फल खाने का मौका भी नहीं मिल पायेगा ?

बाबाजी ने उसे समझाते हुए कहा- देखो बेटा, मैं एक बूढ़ा व गरीब आदमी हूं । धन से किसी की सहायता नहीं कर सकता, परंतु थोड़ी बहुत मेहनत करके दो-चार पेड़ लगाकर उनकी देखभाल तो कर ही सकता हूं । यदि मेरी थोड़ी-सी देखभाल से ये पेड़ उग गये तो बड़े होकर किसी ने किसी को अपने फल व छाया देंगे, साथ ही पर्यावरण को भी शुद्ध करेंगे, आने वाली पीढ़ी को इससे लाभ मिलेगा ।

बूढ़े बाबाजी की बातें सुनकर नन्दू को अपने आप पर बहुत शर्म आयी और उस दिन से उसने आलस छोड़कर काम करने का निश्चय किया और उन बूढ़े बाबाजी का हाथ बंटाने लगा । साथ ही उसने अपने खेत और आसपास की खाली जगहों पर पौधों को लगाने व उनकी देखभाल करने का कार्य प्रारंभ कर दिया ।

